SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

ओशो एवं मनोविज्ञानः मानवीय समस्याओं के निदान की दिशा में एक समग्र दृष्टि

विभाष कुमार झा, शोधार्थी, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
श्री शंकराचार्य प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, भिलाई, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
विभाष कुमार झा, शोधार्थी
E-mail : vibhashjhacg@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 06/07/2025
Revised on : 06/09/2025
Accepted on : 16/09/2025
Overall Similarity : 08% on 08/09/2025

शोध सार

बीसवीं शताब्दी में भारत में जन्मे चर्चित दार्शनिक तथा आध्यात्मिक गुरु ओशो (1931–1990) ने मानव जीवन की समस्याओं के मूल कारणों को खोजने और उनका निदान प्रस्तुत करने के लिए मनोविज्ञान को एक महत्वपूर्ण साधन माना। उनके प्रवचनों में सिगमंड फ्रायड, कार्ल जुंग, अब्राहम मस्लो सहित अन्य मनोवैज्ञानिकों के विचारों का उल्लेख प्रायः मिलता है। ओशो यह कहते थे कि मनोविज्ञान को यदि ध्यान और आत्मज्ञान से जोड़ दिया जाए, तो यह न केवल मानसिक रोगों का स्थायी निदान कर सकता है, अपितु मनुष्य की चेतना को आत्म–ज्ञान तक भी ले जा सकता है। ओशो ने अपने अनेक प्रवचनों में पश्चिम के मनोविज्ञानियों की उपलब्धियों को स्वीकार किया करते हुए उसकी सीमाओं की भी ओर इशारा किया और भारतीय आध्यात्मिक परंपराओं के साथ उसका समन्वय करने का प्रयास किया।

मुख्य शब्द

ओशो, मनोविज्ञान, मानव समस्या, जुंग, मस्लो, निदान आत्म–ज्ञान.

ओशो का मनोविज्ञान के प्रति दृष्टिकोण

ओशो ने मनोविज्ञान को केवल एक चिकित्सकीय उपकरण नहीं माना, बल्कि इसे आत्म–खोज और आत्म–परिवर्तन का माध्यम बताया। उनका विचार था कि आधुनिक मनोविज्ञान ने मनुष्य की गहरी समस्याओं को समझने की दिशा में कुछ महत्त्वपूर्ण प्रयास किए हैं, किंतु इसका लक्ष्य केवल 'सामान्य' या 'एडजस्टेड' व्यक्ति को तैयार करना है। जबकि ओशो के अनुसार, मानव का लक्ष्य केवल अनुकूलन नहीं बल्कि आत्मोन्नति और आत्म–ज्ञान होना चाहिए। अनुकूलन से तो मनुष्य को मिलने वाली आंतरिक स्वतंत्रता के मार्ग ही बंद हो जायेंगे।

उन्होंने मनोविज्ञान को ध्यान, समाधि और आंतरिक अनुभवों के साथ जोड़कर एक ने विषय के रूप में प्रस्तुत किया। ओशी का मानना था कि पश्चिमी मनोविज्ञान रोगों का निदान तक ही सीमित रहता है, किन्तु, ध्यान और आध्यात्मिकता, मनुष्य के प्राण–तत्व और उसकी चेतना को उच्चतम शिखर तक ले जाती है। यहीं से मनुष्य के आन्तरिक विकास और आत्म–उन्नति का आरंभ होता है।

सिगमंड फ्रायड के प्रति ओशो का दृष्टिकोण

ओशो ने सिगमंड फ्रायड के अवचेतन (Unconscious) और दमन (Repression) के सिद्धांतों को स्वीकार किया। फ्रायड के यौन सम्बन्धी सिद्धांतों और विचारों को भी ओशो ने स्वीकार किया। उन्होंने माना कि समाज और धर्म ने मानव की यौन ऊर्जा तथा अन्य प्रवृत्तियों को दमन के माध्यम से दबाया, जिससे अनेक प्रकार मानसिक रोग तथा अवसाद, कुंठा आदि उत्पन्न होते हैं। ओशो ने फ्रायड के इस अन्वेषण को समूचे मानव इतिहास के लिए क्रांतिकारी बताया कि व्यक्ति का बहुत बड़ा हिस्सा अवचेतन में छिपा है और वहीं से उसकी समस्याओं की जड़ें निकलती हैं। यदि इस अवचेतन के अंतिम बिंदु तक पहुंचना संभव नहीं हो पाया, तो मनुष्य कि किसी भी समस्या अथवा रोग का सम्पूर्ण उपचार कभी भी नहीं हो पायेगा।

हालांकि, ओशो ने सिगमंड फ्रायड के अध्ययन और निष्कर्षों की सीमाओं के लिए उनकी आलोचना भी की। उनके अनुसार, फ्रायड ने केवल रोगी व्यक्ति को 'सामान्य बनाने का अपना समस्त अध्ययन और प्रयास किया, किन्तु आत्मज्ञान या समाधि तक पहुँचने की दिशा में कुछ नहीं कहा इसीलिए ओशो ऐसा मानते हैं कि फ्रायड का अध्ययन अधूरा था। वास्तव में उनको ध्यान तथा आत्म–ज्ञान की दिशा में और अध्ययन करने की आवश्यकता थी।[1]

कार्ल जुंग के प्रति ओशो का दृष्टिकोण

ओशो ने कार्ल जुंग के सामूहिक अवचेतन (Collective Unconscious) और आर्केटाइप्स के सिद्धांत को एक गहरी आध्यात्मिक संभावना के रूप में देखा। ओशो का कहना है कि जुंग ने सामूहिक अवचेतन तक जाने कि चर्चा जिन अर्थों में की है, उसकी मदद से मनुष्य इस विराट अस्तित्व और ब्रह्माण्ड के सहस्यों तक पहुँच सकता है और 'लॉ ऑफ़ अट्रेक्शन (आकर्षण के नियम) को भी सही अर्थों में समझ सकता है। ओशो के अनुसार जुंग ने जो मिथकीय और धार्मिक प्रतीकों की चर्चा की, वे भी मनुष्य की चेतना के विकास के सोपान बन सकते हैं। ओशो का मानना था कि जुंग ने मनोविज्ञान को धर्म और आध्यात्मिकता की दिशा में मनोविज्ञान की कुछ गहरी परतों को अनावृत करने का अमूल्य कार्य किया है। ओशो ने कार्ल जुंग की इस बात की प्रशंसा की, कि स्वप्न और प्रतीकों के माध्यम से व्यक्ति अपनी गहरी परतों को जान सकता है। ओशो के अनुसार, यही पहचान गहरी होने पर मनुष्य को ध्यान की दिशा में प्रेरित कर सकती है।[2]

अब्राहम मस्लो तथा आत्म–साक्षात्कार

ओशो ने अब्राहम मस्लो के 'हायरार्की ऑफ नीड्स' सिद्धांत की चर्चा अपने कुछ प्रवचनों में प्रमुखता से की है। मस्लो ने आत्म–साक्षात्कार (Self-actualization) को मानव विकास का सर्वोच्च स्तर बताया था। ओशो के अनुसार मस्लो का यह अन्वेषण, भारतीय वेदांत और बौद्ध ध्यान परंपरा से भी मेल खाता है। ओशो ने मस्लो की इस अवधारणा की मुक्त कंठ से सराहना की, कि मनुष्य का जीवन केवल अपनी जैविक और सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि उसे आत्मसिद्धि की दिशा में भी बढ़ना चाहिए किन्तु, ओशो ने मस्लो की अवधारणा में यह महत्वपूर्ण बिंदु भी जोड़ा कि आत्म–साक्षात्कार के बाद भी एक उच्चतर अवस्था है आत्मोत्कर्ष (Self-transcendence) और समाधि।[3] इसे ओशो के अध्ययन–चिंतन और उनकी देशना का प्रमुख सोपान कहा जा सकता है।

ध्यान एवं मनोविज्ञान का सामंजस्य

ओशो का कहना है कि मनोविज्ञान का अध्ययन केवल तभी सही अर्थों में पूर्ण हो सकता है, जब वह ध्यान और समाधि के साथ एकरूप हो जाये। उनका विचार था कि मनोवैज्ञानिक विधियाँ मनुष्य की समस्याओं का केवल

सतही स्तर पर समाधान कर सकती हैं, लेकिन जब तक मनुष्य की चेतना की जड़ों तक जाकर वहां बदलाव न किया जाए, तब तक वास्तविक अर्थ में मुक्ति संभव नहीं है। ओशो की, डायनामिक मेडिटेशन, कुंडलिनी मेडिटेशन आदि ध्यान विधियाँ उनके इन्हीं विचारों के प्रकटीकरण हैं। ओशो का विचार था कि इन ध्यान–प्रक्रियाओं के माध्यम से मनुष्य के भीतर का दमन तिरोहित होता है, तथा जीवन–ऊर्जा उर्ध्वगामी होते हुए मुक्त होती है. ऐसी स्थिति में मनुष्य अपने भीतर एक असीम गहरी शांति की अनुभूति कर सकता है।[4]

आलोचनाएँ और सीमाएँ

विभिन्न मनोविज्ञानियों के अध्ययन के क्षेत्र को जानने और ओशो के उन सबके प्रति दृष्टिकोण को समझने के पश्चात यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि जहाँ एक ओर ओशो ने मनोविज्ञान को आध्यात्मिक चेतना के मार्ग से सूत्रबद्ध करने का प्रयास किया, वहीं उनके आलोचकों का विचार है कि ओशो की यह व्याख्या, पारंपरिक मनोविज्ञान की वैज्ञानिक पद्धति से अलग है। कुछ मनोवैज्ञानिकों का ऐसा विचार भी रहा कि ओशो के तर्क और विचार, दार्शनिक हैं और अनुभवजन्य प्रमाणों के बिना उनका आधार यथार्थ से दूर प्रतीत होता हैं।

मनोविज्ञानियों और ओशो के विचारों में इस स्पष्ट भेद के बाद भी, अनेक आधुनिक मनोचिकित्सक और शोधकर्ता यह मानते हैं कि ओशो का दृष्टिकोण न केवल मनोचिकित्सा को समृद्ध कर सकता है, अपितु, ध्यान और दमन–मुक्ति कि दिशा में ठोस प्रयास करने को प्रेरित भी करता है. ओशो ने मनोविज्ञान को एक सोपान की तरह उपयोग में लाते हुए मनुष्य की मुक्ति का मार्ग खोजा है।

निष्कर्ष

ओशो ने मनोविज्ञान को मनुष्य की समस्याओं के निदान का एक आवश्यक माध्यम माना, परंतु इसे अंतिम समाधान नहीं बताया। उन्होंने फ्रायड, जुंग और मस्लो जैसे मनोविज्ञानियों के विचारों को अपने प्रवचनों में शामिल करते हुए दिखाया कि मनोविज्ञान और ध्यान मिलकर मानव जीवन को न केवल स्वस्थ बना सकते हैं, बल्कि आत्मज्ञान की ओर भी ले जा सकते हैं। अतः यह कहना उचित होगा कि ओशो के अनुसार मनोविज्ञान और अध्यात्म का संतुलित सामंजस्य ही मनुष्य की संपूर्ण मुक्ति और समाधान की दिशा में पहला कदम है।

संदर्भ सूची

1. Osho (1979) From Sex to Super-consciousness; discourse, Rebel Publishing House Pvt. Ltd, Mumbai, Reprint 1996, ISBN 8172610106.
2. Osho (1972) The Psychology of the Esoteric, Rebel Publishing House Pvt. Ltd, Mumbai, ISBN 9783893380572.
3. Osho (1987) The New Man: The Only Hope for the Future, Rebel Publishing House Pvt. Ltd, Mumbai/Osho International, ISBN 9783893380053
4. Osho (1991) Meditation: The First and Last Freedom, St. Martin's Press, NY, ISBN 0312336632.
5. Maslow, A. H. (1954) *Motivation and personality,* Harper, Harper & Row, New York, https://doi.org/10.1037/11305-000, Later edition ISBN: 9780060419875.
6. Nagaraj, A.K.M, (2013) Osho: Insights on sex, *Indian Journal of Psychiatry,* 55 (Suppl-2), S268–S272.
7. Urban, H. B. (2016) Zorba the Buddha: Sex, spirituality, and capitalism in the global Osho movement, University of California Press, Berkeley, ISBN 9780520286672. https://doi.org/10.1525/9780520964846.

****